रम-पा रम्पा रम-पम-पम

गीता धर्मराजन
चित्राँकनः चार्वाक दीप्त

कथा की 300एम थिंकबुक

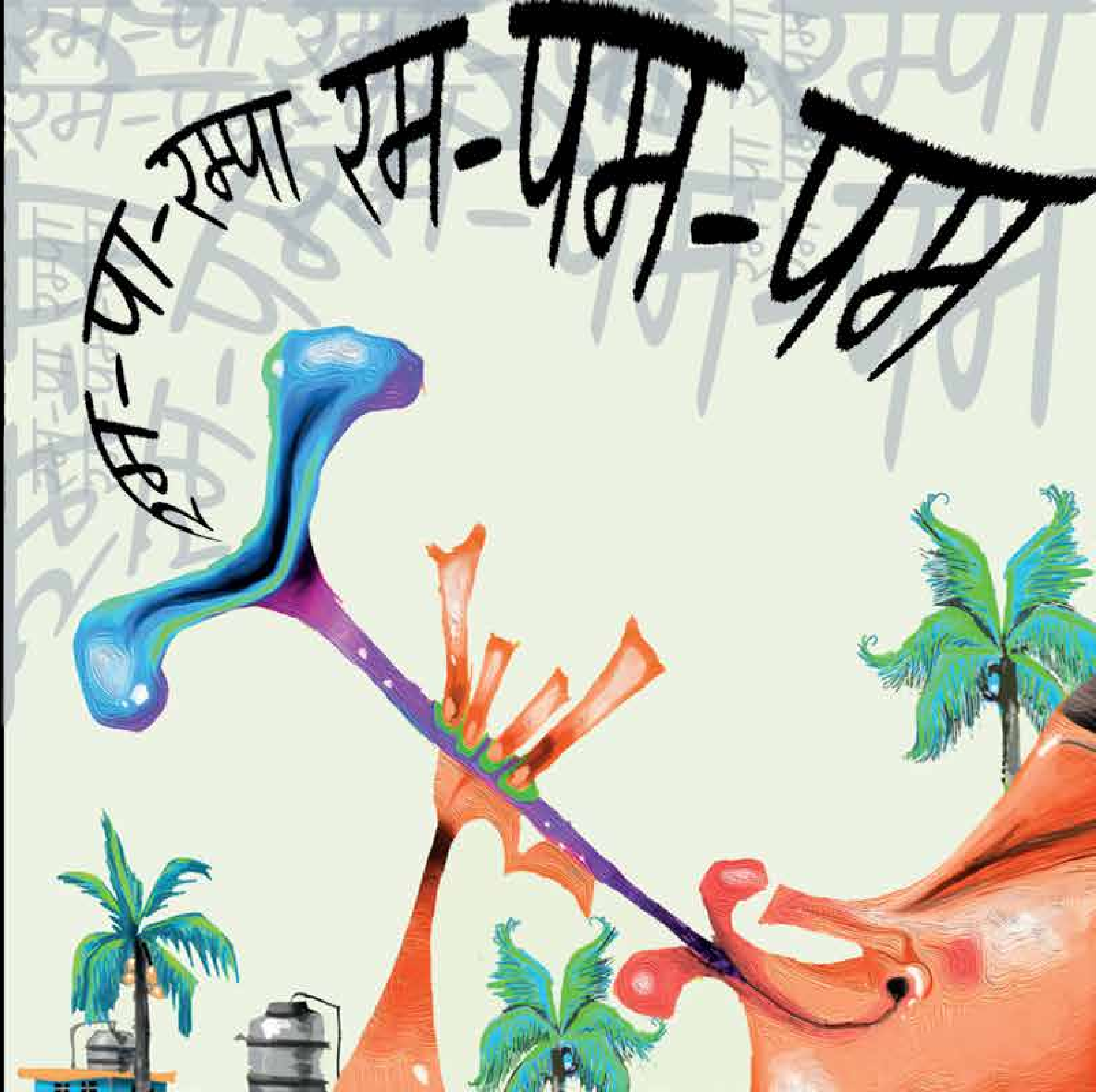
रम-पा-रम्पा रम-पम-पम

लड्डू और पराठा ने
आव देखा न ताव
लड़ने लगे
लेने को पाव

समोसों ने कहा
“स्कूल हमको है जाना
हमको देखेगा ज़माना!”

रोटी ने भरी हामी!
"सही बात!" बोला भात!

"क्या आओगे हमारे साथ?"

नाना-नानी
आये साथ लेकर
ठंडा कोला,

पकड़ ली
सबने लाल रंग
की ओला!

पराठे और लड्डू
की लड़ाई हुई
ख़तम!

वह भी बैठ ओला में
करके धम्मक-धम

रम-पा-रम्पा
रम-पम-पम

टैक्सी थी वह
बड़ी,

कर चली
पम-प-पम

उन्होंने लगा ली रेस।

उड़ चले बहुत तेज़!

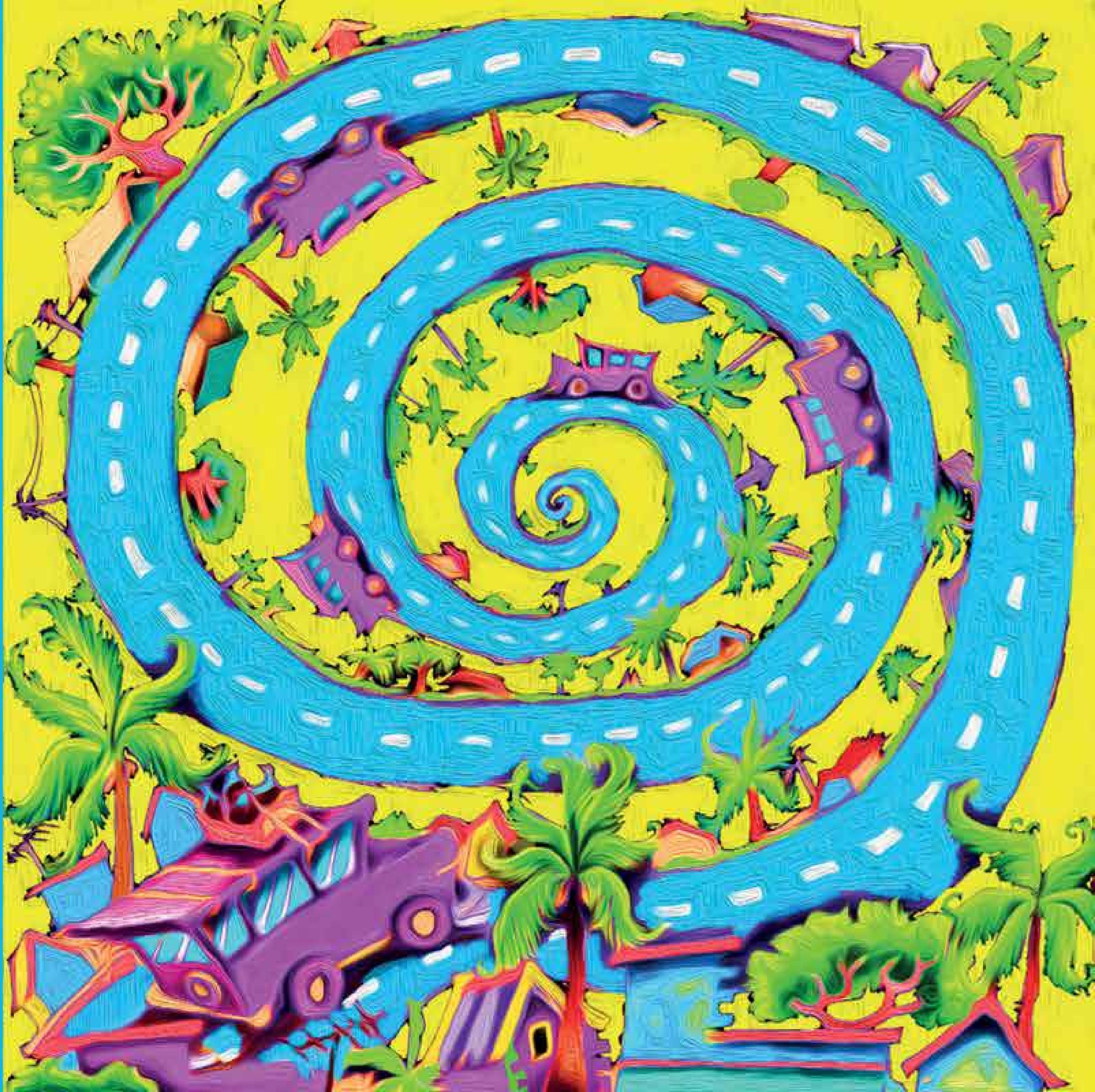

अंतरिक्ष की सैर भी की

बड़ी सनसनीखेज़!

रम-पा-रम्पा
रम-पम-पम

इन दोनों चित्रों के बीच में 5 अंतर ढूंढो

भैया की नुक्कड़
की दुकान
पर पहुंची
उनकी **गाड़ी!**

लप-लप-गप-गप ...
खाने को पानी-पूड़ी

उनके
सुपर टीवी
पर देख रहे क्रिकेट।

पी रहे
मीठी चाय
गिनते हुए विकेट

दिन हुआ
ख़तम!

और हुई ख़तम
धम्मक-धम

ढम-पा
ढम्पा
ढम-पम
पम

गीता धर्मराजन बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किये गये इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

चार्वाक दीप्त ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र हैं और एक पुरस्कृत इलस्ट्रेटर भी। इन्हें देश–विदेश की यात्रा करना और विभिन्न प्रकार का खाना, खाना बेहद पसंद है।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" — **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" — **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" — **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

— **चार्ल्स लैंड्री, *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2021

चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा

स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

READ FOR FUN AND MEANING ALL THESE ILR BOOKS IN THE YELLOW SERIES

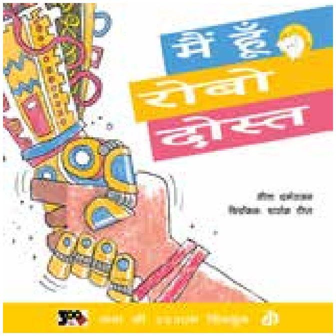

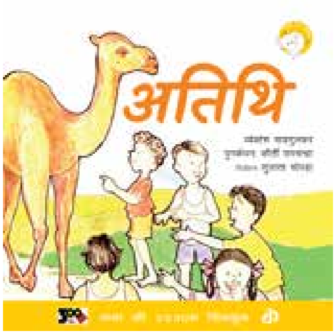

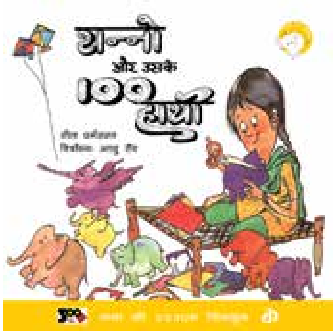

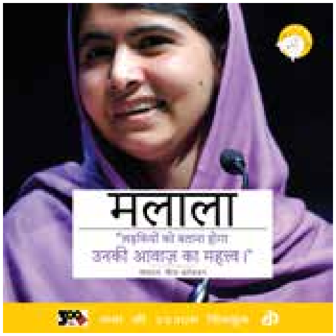

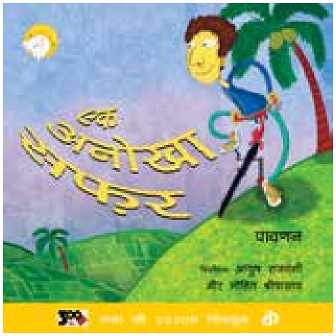

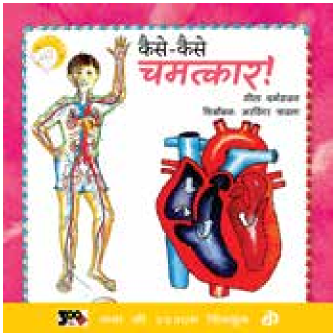

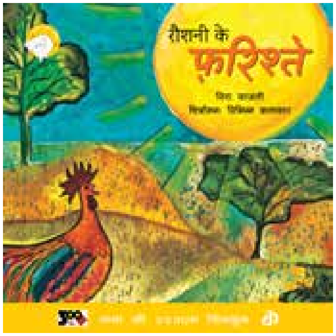

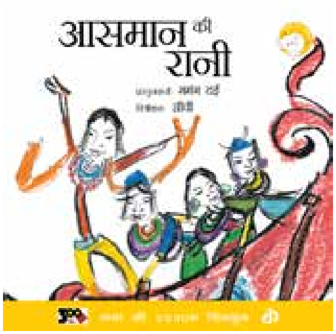

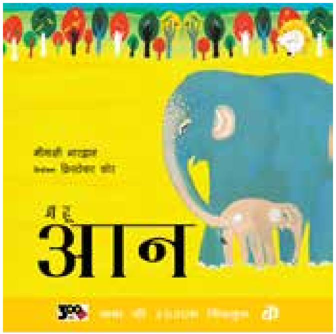

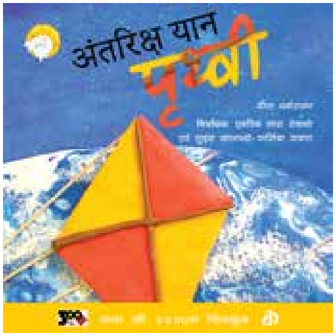

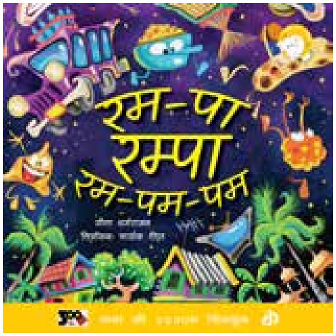

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
www.katha.org
₹ xxx